पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता – मॉड्यूल तीन – उसने हमें भविष्यद्वक्ता दिए – भाग 3

विचार-विमर्श के प्रश्न

1. आपको इस अध्याय में क्या सबसे अच्छा लगा, या आपने क्या सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी? आपके मन में क्या प्रश्न थे?
2. 2 राजाओं 18-19 पढ़ें। सन्हेरिब आक्रमण के दौरान राजा हिजकिय्याह ने यहोवा से उसे और उसके लोगों छुड़ाने की विनती की। आपके विचार में परमेश्वर ने राजा हिजकिय्याह के लिए क्यों कार्य किया? परमेश्वर किस प्रकार आज के विश्वासियों को छुड़ाता है जो बड़े-बड़े शत्रुओं का सामना करते हैं?
3. भविष्यद्वक्ताओं के बीच योना की सेवकाई का स्थान विचित्र था उसे अश्शूर की राजधानी नीनवे जाने के लिए कहा गया था। योना की अपेक्षा के विपरीत लोगों ने पश्चाताप किया। सारे राष्ट्रों में परमेश्वर के नाम के विषय में योना की सेवकाई आपको क्या दर्शाती है? आपके शत्रुओं के विषय में योना की सेवकाई आपको क्या दर्शाती है?
4. दंड या तबाही के दिनों में भी भविष्यद्वक्ता यशायाह ने यहोवा पर भरोसे की बात कही। किस प्रकार यशायाह ने अपने श्रोताओं को विश्वास दिलाने का प्रयास किया? यशायाह की रणनीति से आज के मसीही क्या सीख सकते हैं?
5. पुनर्वास के दौरान के भविष्यद्वक्ताओं ने कहा कि बड़ी आशीषें दूर भविष्य में ही आएँगी। यह हमें मसीह द्वारा निभाई गई भूमिका के बारे में क्या बताता है? मसीह द्वारा निभाई गई इस भूमिका का ज्ञान किस प्रकार विश्वासियों के साथ और अविश्वासी संसार के साथ हमारे व्यवहार को प्रभावित करना चाहिए?
6. भविष्यवाणिय पुस्तकों में ऐतिहासिक वर्णनों पर ध्यान देना क्यों महत्वपूर्ण है?
7. हमें किस प्रकार भविष्यवाणी को पढ़ना चाहिए, इसके बारे में प्रमाणिक भविष्यवाणिय प्रारूप क्या दर्शाते हैं?
8. पिछली बार कब आपने परमेश्वर के समक्ष विलाप करते हुए समय बिताया था? किस प्रकार का विलाप आपने किया? कितनी बार आप कष्टों को अपने जीवन में ईश्वरीय दंड के परिणाम के रूप में समझते हैं? भविष्यद्वक्ताओं द्वारा किए गए विलाप के उन रूपों से हम क्या सीख सकते हैं जो शायद परमेश्वर को सकारात्मक रूप से प्रत्युत्तर देने में प्रेरित करें?
9. दंड के लिए स्तुति भविष्यवाणिय लेखनों में बहुत स्थानों में पाई जाती है। क्या मसीहियों के लिए दंड के लिए परमेश्वर की स्तुति करना उचित है? क्यों या क्यों नहीं?
10. भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर की आशीषों और शापों के बारे में बार-बार क्यों बोला? क्या आज की कलीसिया को ऐसा ही करना चाहिए? क्यों या क्यों नहीं?

**समीक्षा कथन :** आदम के समय में कम से कम तीन स्तम्भ स्थापित किए गए जो बाइबल के संपूर्ण इतिहास में बने हुए हैं। पहला है मनुष्य की ज़िम्मेदारी क्योंकि वह परमेश्‍वर के स्वरूप में बनाया गया है। दूसरा, आदम के पाप के कारण मनुष्य की भ्रष्टता है। तीसरा, परमेश्वर की प्रतिज्ञा के कारण मनुष्य के छुटकारे की आशा है। पाप में पतन के ठीक बाद, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह छुटकारा देगा।

**विषय का अध्ययन :** कार्ल एक पासवान थे जो अपने काम का आनंद लेते थे — प्रचार, परामर्श, सुसमाचार प्रचार — ये सब कार्य उन्हें ऊर्जा देते थे। एक दिन उनकी पत्नी ने कहा, “मुझे लगता है कि आप बहुत अधिक काम कर रहे हो।” उन्होंने कहा, “मुझे तो ऐसा नहीं लगता। तुम ऐसा क्यों सोच रही हो?” उसने कहा, “कैसा रहेगा यदि मैं अगले कुछ सप्ताहों तक आपके काम के घंटों का हिसाब रखूँ, ताकि पता चल सके कि आप कितने घंटे काम कर रहे हैं?" कार्ल इस बात पर सहमत हो गए। दो सप्ताह बाद उनकी पत्नी ने बताया कि वह प्रति सप्ताह 80 घंटे काम कर रहे थे। वह चकित रह गए। उनकी पत्नी ने कहा, “कृपया मेरे और हमारे बच्चों के साथ थोडा और समय बिताएँ।”

मनन के प्रश्न :

1. क्या पासवान के कार्य को, या किसी भी कार्य को एक मूर्ति बना देना संभव है? (मूर्ति वह चीज है जो किसी भी कारणवश एक ऐसे रूप में मसीह का स्थान ले लेती है जो आपके जीवन को अर्थ देती है।)
2. अपने जीवन को अर्थ देने के संबंध मसीह से अधिक महत्व अपने काम को दिए बिना आप एक पासवान के रूप में कैसे अच्छे से काम कर सकते हैं?
3. मनुष्य कौन है के विषय में मुख्य सिद्धांत आज विकासवाद का सिद्धांत है, जो बाइबल के इस दृष्टिकोण को चुनौती देता है कि हम परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं। यदि लोग विकास के सिद्धांत के अनुसार होते कि वे कौन हैं, तो व्यक्तिगत व्यवहार और संस्कृति के लिए तार्किक परिणाम क्या होते? अपने सीखने वाले समुदाय में इस पर चर्चा करें।
4. क्या आप ऐसे अविश्वासियों को जानते हैं जो ऐसा सोचते और/या कार्य करते हैं मानो वे उसके स्वरूप में नहीं बनाए गए और इसलिए उसके प्रति उत्तरदायी नहीं हैं? उदाहरण दीजिए।
5. क्या आप ऐसे विश्वासियों को जानते हैं जो ऐसा सोचते और/या कार्य करते हैं मानो वे उसके स्वरूप में नहीं बनाए गए और इसलिए उसके प्रति उत्तरदायी नहीं हैं? उदाहरण दीजिए।
6. आप इस संबंध में अपनी संस्कृति का मूल्यांकन कैसे करेंगे? अर्थात्, क्या वे सृष्टिकर्ता परमेश्वर के प्रति किसी प्रकार की जिम्मेदारी मानते हैं?

दिए जानेवाले कार्य

* एक या दो सप्ताह तक अपने काम के घंटों का हिसाब रखें। अपना काम करने के लिए स्वयं को जिम्मेदार बनाए रखें, साथ ही अपने काम को ईश्वर भी न बनाएँ।